श्री सीताराम चरणौ शरणं प्रपद्ये

श्रीमद्   वराहोपनिषद् वेद्या खण्ड   सुखाकृति ।
त्रिपान्नारायण आख्यं तद् रामचन्द्र पदं भजे ॥

Varah upanishad

Srimad Varaha Upanishad

The altar section is of a pleasant shape.

I worship that lotus feet of Lord Rāmacandra, who is known as Nārāyaṇa, the three-footed Lord.

शंखचक्रधरं देवं द्विभुजं पीतवासमम्।
प्रारंभे कर्मणां विप्र पुण्डरीकं स्मरेद्धरिम इति।।

विष्णु पुराण

The god with conch and wheel is two-armed and dressed in yellow. O brāhmaṇa at the beginning of actions one should remember Pundarika as Hari (श्रीराम)

अस्मत्सवामिना रामस्य एव नारायणस्य सकल जगत्परायणस्य अंशेन भवता भवितव्यम्।

(Vishnu Puran)

Jambvant says to krishna:- हे श्रीकृष्ण! जैसे हमारे स्वामी श्री रघुनाथ राम के अंश से नारायण हूए ठीक वैसे श्रीमन् नारायण के अंश से आप हुए।

द्विभुजो जानकीजानिस्सदा सर्वत्र एव हि।
भक्तेच्छातः पुनर्जातो वैकुंठे ते चतुर्भुज।।

शिव संहिता

The two-armed Janakivallabh shri ram is always everywhere. O four-armed one you are reborn in Vaikuntha by the will of your devotee

नारायणोऽपि रामांश शंखचक्रगदाधारः।
चतुर्भुज स्वरूपेन् वैकुंठे च प्रकाशते।।
(आदि रामायण, भरद्वाज संहिता, वराह संहिता)

Even weilder of conch, chakra and mace shriman Narayan is ansh of bhagwan Shri Ramchandra, who is illuminated in vaikunth as chaturbhuj.

राघवस्य गुणो दिव्यो महाविष्णु स्वरुपवान्
वासुदेव घनीभूत तनुतेजो महाशिवः।।
(सामवेद सुदर्शन संहिता, वशिष्ठ संहिता, हनुमान संहिता, शिव संहिता)

By shri Ramchandra’s infinite divine attributes, mahavishnu has got his swarup, vasudev krishna is shri ram’s aishvarya and sadashiv is his luminance

ततस्तवमसि दुर्धर्षात्रिस्माद भावात् सनातनात्।
रक्षार्थ सर्वभुतानाम् विष्णुसं उपजग्मिवान्।।

Valmiki Ramayan7.104.9

Kaal says:- After my prayers, in the beginning of creation, you forsaken your durdharssa form(form that is difficult to be achieved by so me many) the bhava (2 armed Shri Ram) and assumed the form of Vishnu (narayan) for the sake of protection and sustenance of all living beings.

सुर्यस्यापि भवत् सुर्यो ह्यग्नेरग्नि प्रभोः प्रभुः।
श्रियः श्रीश्चभवेद्ग्र्या कीर्त्या कीर्तिः क्षमाक्षमा।।
देवतं देवतानांच भुतानां भुतं रुत्तमः।
तस्य के ह्यगणा देवि देशेव्याप्यथवा वने।।

(Valmiki Ramayan)

Shri Ram is sun of sun, Agni of Agni, Prabhu of Prabhu (narayan), maa Sita is laxmi laxmi, kirti of kirti and kshama of kshama.

यथा लोकेषु गोलोकः सरयु निम्नगासु च।
शक्तीनां च यथा सीता रामो भगवतामपि।।

(Maha ramayan)

Among all lokas , golok is best as it contains saket lok in centre and among all rivers, saryu is best , among all powers, maa Sita is best and among all bhagwan (narsimha, narayan, krishna etc) shri Ram is the best.

रामो नारायणः साक्षात् सर्वदेवैश्च प्रार्थितः।
पृथ्वीभारावताराय जातो दशरथात् स्वयम्।

(Satyopakhyan)

Rama is directly prayed to by all the gods He himself was born to Dasaratha to relieve the burden of the earth

परं ब्रह्म परं धामं जगतां कारणं परम् ।
नागशय्या शयानं च द्विभुज रघुनंदनम्।।

(Satyopakhyan)

Two armed Shri Raghunandan is the supreme Brahman, supreme abode and is the cause of jagat who rests on bed of serpent.

दशावतारव्येऽपि रामकृष्णौ महत्तमौ।

ताभ्यामपि वरः पुर्वः सत्यसंधो रघुत्तमः।।

Anand Ramayan Manohar 3.29b &30a

Among all ten avtars , Ram and Krishna are important and among these two, Shri Ram is best.

श्रीनाथे जानकीनाथे अभेदः परमात्मतन ।
तथापि मम् सर्वस्वं श्री राम कमललोचनः।

(Hanuman natak)

श्री हनुमान जी कहते हैं:– श्रीमन नारायण श्रीराम ये दोनों परमात्मा से असभन्न हैं किर भी कमललोचन श्रीराम ही मेरे सब कुछ है ।

यस्यांशा एव सर्वे वयमिह भुवने ब्रह्माविष्णु ईश मुख्याः।

सृष्टि स्थिति अन्त लीला विचरण चतुरा वर्तयन्तीह चक्रम।।

(Adi ramayan)

Adi Narayana says, “O Rama! From a portion of yours, I incarnate myself as Brahmā, Viṣṇu and śankara in different universes and Perform the process of creation, maintainance and destruction and reside there.

अयोधयां पररतो देशे कोटिविष्ण्वादयो वयम्।
वसामः सततं र्त्स रघुर्राज्ञाप्रपालकाः ॥३७॥

(Aadi Ramayan)

~ Millions of Vishnus live in the country of ayodhya and are obedient to the commands of Sri Raghunandan.

.

एष श्रीरामः सर्वज्ञः सर्वेश्वरः आनन्दभुक त्रयावस्था परः तत्वम् नारायणो विष्णु नरसिंह वराहो कृष्णोमत्स्यादि अवतारा: यस्थांक कलाभूताः तदेव परमात्मनं वृणीमहे भूतम् भव्यम् भवच्चास्मात् सम्भूत्वा एवं भूतं य वेद स पापात्मान विहाय अमृतत्वम् च गच्छति ।

(अर्थवर्ण उत्तरार्ध श्रुति)

ये ही श्रीराम सर्वज्ञ है, सर्वेश्वर है, आनन्द भोक्ता है, तीनों अवस्था से परे हैं, परमतत्व है, नारायण विष्णु, नृसिंह, बाराह, कृष्ण, मत्स्यादि सभी अवतार जिनके कलांश विभूति स्वरूप है, उसी परमात्मा श्रीराम का हम वरण करते हैं। भूत भाविष्य वर्तमान जिनसे होते रहते हैं, वही परमात्मा राम है, ऐसा जो जानता है, वह सभी पापों को त्यागकर अमृत धाम को प्राप्त करता है।

राम एव परम् प्राहुः परमात्मा भिधीयते रामात्परतर नास्ति यत्किञ्चत स्थूल सूक्ष्म च

(अथर्वण उत्तरार्धे श्रुति)

श्रीराम परंब्रह्म कहे जाते है तथा वही परमात्मा के नाम से भी पहिचाने जाते है। राम से परात्पर स्थूल सूक्ष्म कारण अन्य कुछ भी किञ्चित मात्र नहीं है।।

यस्यांशेन एव ब्रह्मा विष्णु महेश्वर अपिजाता।

महाविष्णुरस्य दिव्यगुणांश्च स एव कार्यकारणो।

परः परमपुरुषो रामो दशरथि बर्भुव।।

(,अर्थवर्ण उत्तरार्ध श्रुति)

जिनके अंश से ब्रह्मा, विष्णु और महेश होते तथा जिनके दिव्य गुणों से महाविष्णु कार्य के कारण हुए हैं वो श्रीराम ही हैं।

महाशम्भु सहस्रस्य महाब्रह्मशतस्य च ।

सृष्टिस्थिलयानां च कर्ता श्री रघुनन्दनः ।।

(हनुमान संहिता)

~ Śrī Raghūnandan Is the creator, preserver ans Destroyer of thousands of Mahasambhus and Mahabrahmas.

यस्यांशेन एव ब्रह्म विष्णु महेश्वरा अपि जाता महाविष्णुर्य्यस्य दिव्यगुणाश्च ।
स एव कार्यकारणयोः परः परमपुरुषो रामो दाशरथिर्वभुव ।।

(वशिष्ठ संहिता अ२६)

~ Whose Portions are Brahma Visnu and Mahesvara, Whose divine Guna is Mahavisnu,The one who is the cause of all causes, The one who is higher than the highest, such is Ramachandra, the son of Dasratha.

आनन्दो द्विधः प्रोक्तो मूर्तश्चामूर्त एव च ।अमूर्तस्याश्रयोमूर्तः परमात्मा नराकृतिः

स्थूलं चाष्टभुजं प्रोक्तं सूक्ष्मं प्रोक्तं चतुर्भुजम्।
द्विभुजं परात्परं प्रोक्तं तस्मादेतत्त्रयं यजेत्॥

(Anand samhita)

~ The Ananda (Bliss which is the essential nature of Bhagavan) is of two kinds – one is Saguna Brahm and another is Nirguna-Brahm. Of these two, Saguna-Brahm has a form like a Human and He is the basis of the Nirguna-Brahm. There are three kinds of Human-forms of Bhagavan, Sthula (gross), Sukshma (subtle) and Paratpar (the most superior). Sthula Brahman is the god with eight arms (i.e. 8 armed Bhuma-Vishnu) and is visible, but the form of Vishnu who has 4-arms is subtle i.e. He is Sukshma-Brahman, However the God who is of two-armed (i.e. Lord Ram in his eternal form), is the most superior (a fiu). Therefore, All these three forms of Lord are worshipable for all.

द्विभुजाद् राघवै नित्यं सर्वमतेत्प्रवर्तते।

परान् नारायणोश्चैव कृष्ण परतराद् अपि।
उभयपरात्मनः श्रीमानः रामो दशरथि स्वराट्।।

~ Anand samhita

परान् नारायणोश्चैव कृष्ण परतराद् अपि।
यो वै परतमः श्रीमान् रामो दशरथि स्वराट्।।

~Vashisht samhita

Beyond Narayana and krishna and beyond that, Shri dasrath putra Ramchandra is supreme personality of godhead.

श्रीकृष्ण वेणुरणनैः स्त्रियादिमोहनः।

अयं तु स्वसौन्दर्येण स्त्रीपुं साधारण जन्तुमोहकः।

Sundarmani sandarbh

Sri Krishna bewitches women and others with his flute playing. This one, however(श्रीराम) is bewitching men, women and ordinary animals with his beauty.

आद्या सा प्रकृति सीता आद्यस्तु पुरुषोत्तम।
गुणातीतो भवान्नित्यो नित्यभुता सनातनी।।

(महासुन्दरी तंत्र)

That first nature (आदि प्रकृति) is Sita and the first is the best of men.(श्रीराम ही आदि पुरुषोत्तम हैं) Transcendental to the modes of nature, Thou art eternal, ever-being, eternal.

सावित्री शैलजा रम्भा नानक्यंश समुद्भवा।
राम्याशं समुदभुतो नारायणोऽपि केशवः।।
त्र्योप्यांशा समुद्भुता श्रीभुलीला विभेदतः।
श्री भवेत् रुक्मिणी साक्षात् सत्यभामा द्दढवताः।।
लीला स्याद् राधिकादेवी सर्वलोक प्रपुजीता।
जानकी च परा प्राहुः शाश्वती रामवल्लभा।।

Sundari tantra

Uma, laxmi, saraswati are created from amsha of maa sita. From Shri Ram 's ansh narayan and krishna came. From maa sita's ansh kala shri, bhu and lila power are created. Shri Shakti is rukmini, bhu shakti is satyabhama and lila shakti is radharani. It is maa Janki who is worshipped in all the worlds.

योपि नारायण अनन्तो लोकानां प्रभवाव्ययः।
मम् एव परमामुर्तिः क्योंकि परिपालनम्।।
(अद्भुत रामायण)

जो नारायण नाम से विख्यात है वे ही अनन्त, लोकेश्वर तथा अव्यय है। वो मेरी ही परमामुर्ति ग्रहण कर संपुर्ण जगत का परिपालन करते हैं।।

राम नैवोद्धितो वीरो लक्ष्मणो विदधत्स्वकः ।
रूपत्रयं महद्वेषं लोकानां हितकाम्यया ॥
एकेन सरयूमध्ये प्रविवेश कृपानिधिः ।
सहस्रशीर्षा भगवान् शेषरूपी रसाश्रयः ॥
रामानुजश्चतुर्वाहुर्विष्णुस्सर्वगुहाशयः ।
ऐन्द्रं रथं समारुह्य वैकुण्ठमगमद्विभुः ॥
यानस्थो रघुनन्दनः परपुरीं प्रेम्णागमद् भ्रातृभिर्लोकानां शिरसि स्थितां मणिमयी नित्यैकलीलापदाम्।

सौमित्रिश्च तदाकलेन प्रथमं रामाज्ञया वर्तते तेनैव क्रमकेन बन्धुमिलितो रामेण साकं गतः॥

(इति श्रीमद् ब्रह्मरामायणे)

भगवान श्रीराम जी के साथ-साथ श्री लक्ष्मण जी ने भी लोकों के हितार्थ रूप सुंदर वेश वाले तीन रूप धारण किए। श्री लक्ष्मण जी का एक स्वरूप सरयू जी में प्रविष्ट हो गया जो सहस्त्र शीश शेषनाग का स्वरूप था। दूसरे स्वरूप से श्री लक्ष्मण जी इंद्रदेव के द्वारा लाए हुए विमान पर बैठकर वैकुंठ की ओर रवाना हो गए यह चतुर्भुज विष्णु स्वरूप था जो सर्वभूतों के हृदय में वास करता है और तीसरे परम द्विभुज रुप से श्रीलक्ष्मण जी, श्री राम जी के साथ विमान पर बैठकर सर्व लोकों के सिरमौर मणिमय, नित्य लीला स्थली श्रीधाम साकेतपुरी को गए।

द्विजात्मजामे युवयोर्दिदृक्षुणा मयोपनीता भुवि धर्मगुप्तये ।

कलावतीर्णाववनेर्भरासुरान् हत्वेह भूयस्त्वरयेतमन्ति मे ॥

(इति श्रीमद् भागवते 10•89•58)

भूमा पुरुष यानी श्री महाविष्णु ने श्री कृष्ण और श्री अर्जुन से कहा :~ मैं ब्राह्मण के पुत्रों को यहां पर लाया हूं ताकि मैं आप दोनों को देख सकूं, (श्री कृष्ण से कहते हुए) आप धर्म की स्थापना के लिए मेरे विस्तार के रूप में अवतरित हुए हैं। जैसे ही आप दोनों पृथ्वी पर बोझ डालने वाले राक्षसों का वध कर दें यथा शीघ्र ही मेरे पास वापस आ जाएं।

AND WHO IS BHUMA PURUSH?

वैकुण्ठेशस्तु भरतः क्षीराब्धीशस्तु लक्ष्मणः ।

शत्रुघ्नस्तु स्वयं भूमा रामसेवार्थमागताः।।

(इति श्रीमद् नारदपंचतंत्रे)

जो श्रीभरत जी वैकुंठ के स्वामी हैं, जो श्रीलक्ष्मण जी क्षीरसागर के स्वामी हैं और जो स्वयं भूमा पुरुष श्रीशत्रुघ्न जी हैं वे सब श्री रघुनाथ जी की सेवा करने के लिए उनके साथ अवतरित हुए।

वायुपुपत्रं विघ्नेशं वाणीं दुर्गां क्षेत्रपालकं सुर्यं चन्द्रं नारायणं नरसिंहं वासुदेव वराहं तत् सर्वान्।

मन्त्रान् सीतां लक्ष्मण शत्रुघ्नं भरत विभीषणं सुग्रीवम् अंगदम् जाम्बवन्तं प्रणवम् एतान् रामस्यांगानि जानिया।।

(अर्थवर्ण श्रुति राम रहस्य उपनिषद)

हनुमान, गणेश, सरस्वती, दुर्गा, क्षेत्र पालक, सुर्य, चन्द्र, नारायण, नरसिंह, वासुदेव कृष्ण, वाराह, सीता, लक्ष्मण, शत्रुघ्न, भरत, विभीषण, सुग्रीव, अंगद, जाम्भवन्त, प्रणव --------→ ये सब श्री राम के अंग ह.

सर्वे अवताराः श्री रामचन्द्रचरणेरखाभ्यः समुदभवन्ति तथा अनंत कोटि विष्णवश्चतुर्व्युहश्च समुदभवन्ति एवम् अपराजित ईश्वरम् परिमिताः पर नारायणाद्यः अष्टभुजा नारायणाद्यश्च अनंतकोटि संख्यकाः बद्धांजलिपुराः सर्वकालं समुपासक्ता।।

(विश्वंभर उपनिषद)

श्री रामचंद्र के चरणों के रेखा से सभी अवतार उत्पन्न होते हैं और अनंत करोड़ विष्णु और चार व्युह उत्पन्न होती हैं और पर नारायणों, अष्टभुजा नारायणों और अनंत कोटि संख्या में ईश्वर उत्पन्न होते हैं।

मरीचिमण्डले संस्थं बाणायुध लांच्छितम्।
द्विहस्तमेकवक्त्रं च रुपमाद्यम् इदम् हरे।।

(पद्म संहिता)

बाणायुध को अपने दोनों हाथों से धारण करने वाले, तथा एक मुख वाले (श्री राम) सुर्य मण्डल में स्थित, सभी अवतारों के अवतारी श्रीहरि का प्रथम स्वरुप है।

आदित्यमण्डलान्तस्थं रुक्माभं पुरुषं परम्।
ध्यायन् जपेत् तदात्येव निष्कामो मुच्यते द्विज।।

(संवर्त स्मृति)

निष्काम द्विज आदित्य मण्डल में स्थित कमनीय कान्ति वाले परम पुरुष भगवान श्री रामचन्द्र जी का ध्यान करते हुए गायत्री मंत्र का जप करना चाहिए।

......**य एषोऽनतरादित्ये हिरणमयः पुरुषो द्दश्यते**.....

(छनदोग्य उपनिषद १.६.६)

जो आदित्य मंडल में स्थित सुवर्णमय सा पुरुष (द्विभुज रघुनंदनम्)

ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च देवेन्द्र देवतास्तथा।
आदित्यादि ग्रहश्चैव त्वमेव रघुनंदन।।

(सनतकुमार संहिता)

हे श्री रघुनाथ! आप ही ब्रह्मा , विष्णु, महेश, देवेन्द्र, देवताओं, सुर्य इत्यादि नक्षत्रों है।